International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मिथिला के पमरिया जाति का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 मो0 इन्तेखाब आलम
उमरी, मधुबनी,
(बिहार)

सार

पमरिया पुत्र के जन्म के समय गाते और नाचते है। पमरिया जाति के लोग ढोलकी और ढफ से समानता रखने वाले वाधयंत्र झालर को प्रयोग में लाते है। बिहार के मधुबनी जिला के जयनगर, लखनौर, झंझारपुर, में ज्यादातर इस जाति के लोग रहते है इसके आलावा दरभंगा, में पाये जाते है ये जाति आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े हुए है। शिक्षा के क्षेत्र में गिने–चुने लोग मैट्रिक पास है। स्नातक बहुत कम या नाममात्र है। ऊँचे पदों पर या सरकारी क्षेत्र मे नाममात्र ही इनकी उपस्थिति है। राजनीतिक क्षेत्र मे उपसरपंच या उपमुखिया तक पहुँच पाए हैं। इन लोगो का अपना–अपना क्षेत्र बँटा हुआ है। आर्थिक तंगी के कारण लोग अपने पुश्तैनी व्यवसाय को अपनाते है। कुछ लोग अन्य व्यवसाय को भी अपनाये है। सरकार के विभिन्न योजनाएँ तथा जागरूकता अभियानों के द्वारा मुख्यधारा से इनको जोड़ा जा सकता है।

कुंजी शब्द :– पमरिया, मिथिला, पुश्तैनी, लखनौर मधुबनी, शिक्षा.

प्रस्तावना

पमरिया एक पेशेवर जाति है जो पुत्र के जन्म के समय गाते और नाचते हैं। गाने की इस क्रिया को पमारा कहा जाता है और जो बाद में पमार से पमरिया बना। पमरिया बच्चे को गोद में लेकर नाचते है। और लम्बी उम्र की दुआ करते है। इसके बदले कपड़ा, अनाज, आभूषण, नगदी इत्यादि उपहार में पाते है।

पमार की उत्पत्ति आबू पहाड़ पर बने अग्निकुंड से बताया जाता है। अग्निकुंड से चार व्यक्ति प्रकट हुए। जिसमे से एक पमार थे। मिथिला देश से नान्य देव परमार का उदाहरण मिलता है। पमरिया जाति के कुछ लोगों की मान्यता है कि इनलोगों का सम्बंध अरब के मदीना शहर के सकीब कबीला से है। अल सकीब कबीला के ही अबुल आस बीन अब्बास से इस जाति के लोग अपने को जोड़ते है और कुछ लोग अपने नाम के साथ अब्बासी टाईटल भी लगाते है, विशेषकर पमरिया जाति के लोग। बिहार के मिथिला क्षेत्र में ज्यादा संख्या में निवास करते है। इनलोगों का मातृभाषा मैथिली है और आय का मुख्य स्त्रोत नाच–गाना ही है।

बिहार के मधुबनी जिला के लखनौर प्रखण्ड के दीप पश्चिमी पंचायत के दीप टोला में पमरिया जाति की अच्छी आबादी है। परन्तु शैक्षणिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति अच्छी नहीं है। लगभग 22 नौजवान मैट्रिक के बाद अन्तर स्नातक की शिक्षा प्राप्त किए है। लगभग 7 लड़कियाँ मैट्रिक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर चुकी है। मो0 आबिद हुसैन, मो0 इसलाम, मो0 इफ्तेखार, मो0 मोईन आदि शिक्षा प्राप्त कर रोजगार के लिए भटक रहे है।

दीप के निकट ही झंझारपुर प्रखण्ड के सुखैत पंचायत के गधनपुर गाँव में लगभग 9 लोग मैट्रिक या इससे ऊपर की शिक्षा प्राप्त की है। मधुबनी जिला के मिथिला दीप निवासी मो0 शफीउर रहमान बी0 एड0 तक शिक्षा प्राप्त किए है। ये उर्दू मध्य विद्यालय, लालबाग, दरभंगा से सेवानिवृत हुए है। इनका बड़ा पुत्र मोजीब रजा, अन्तर–स्नातक शिक्षा प्राप्त कर प्राथमिक मकतब, मिथिला दीप में पंचायत शिक्षक है। इनके अन्य पुत्र स्नातक की शिक्षा प्राप्त किया है।

बिहार के मिथिला क्षेत्र में इनकी भाषा मैथिली हैं इसके द्वारा गाया जानेवाला गीत मैथिली में ही होते हैं। कुछ फिल्मी गीत, कव्वाली को छोड़कर, नात शरीफ भी मैथिली भाषा मे गाते है।

मिथिला क्षेत्र के मधुबनी जिला में इनकी संख्या अच्छी है। राजनगर प्रखण्ड के राँटी पंचायत में ज्यादातर पमरिया अपनी जीविका नाच और गा कर चलाते है। इसमें कुछ लोग बीड़ी, सिलाई एवं छोटे–मोटे दुकानदारी से अपनी जीविका चलाते है। राँटी पंचायत में मो0 इसराइल का पुत्र मो0 रहमतुल्लाह मैट्रिक पास है। बेल्ही दक्षिणी पंचायत के मो0 अबुल खैर उर्दू से स्नातकोत्तर थे। मो0 शमीम अब्बासी स्नातक पास कर मोबाईल रिपयरिंग का काम करते है और मो0 इसराइल दिल्ली के मंगोलपुरी में बिल्डिंग मेटेरियालर्स सप्लायर्स के कारोबार में लगे हुए है। बेला गाँव के मो0 निजाम की पत्नी रजिया बेगम मौलवी कर ऑगनबाड़ी सेविका के रूप में कार्यरत है।

मधुबनी के ही बासोपट्टी के बुन्देलखण्ड गाँव में शफीकुल्लाह की पुत्री अन्तर स्नातक है। इस गाँव में लगभग 160 घर है। कलुआही में 32 घर तो कांधरपट्टी में 62 घर है। इस जाति के लोगों की शैक्षणिक स्थिति अच्छी नहीं है। स्नातकोत्तर तक सिर्फ दो–तीन लोग ही पढ़े हुए है, जिनमे एक मधुबनी जिला के जयनगर प्रखण्ड के बेल्ही दक्षिणी पंचायत के बेला गाँव निवासी मो0 अबुल खैर थे जो जयनगर के कमलाबाड़ी में अवस्थित कबीर महात्मा यदुनन्दन जीवछी केलु–विलट विहंगम इन्टर कॉलेज में शिक्षक के पद पर कार्यरत थे। स्नातक लगभग 6–7 लोग ही है। इसमें एक दरभंगा के जिला स्कूल से प्रधानाचार्य पद से अवकाश प्राप्त साद मोहम्मद हैं।

दरभंगा जिला के केवटी प्रखण्ड अंतर्गत कोठिया पंचायत के बहपुरा गाँव मे लगभग 22 घर पमरिया जाति का है। इस गाँव में एक भी मैट्रिक उत्तीर्ण नही है। मदरसा के अभाव

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

में मजहबी शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी बगल गाँव जाना पड़ता है। ज्यादातर लोग पुश्तैनी काम करते है इसके आलावा दिल्ली, मुम्बई आदि शहरों में काम करते हैं। रहमगंज में लगभग 100 घर पमरिया जाति का था जो अब दर्जन भर रह गया है। जीविका के लिए बिहार के विभिन्न भागों मे फैल गए, इसके कारण शहर के लोग पमरिया के नाच–गान को अशुभ मानने लगे। लालबाबू मेडिकल कॉलेज में कार्यरत है तथा उसकी पुत्री ईशा परवीन अंतर स्नातक तथा नूरनिसां मैट्रिक पास है। दर्जी, जाकिर हुसैन की पुत्री नाजनी परवीन अंतर–स्नातक की शिक्षा प्राप्त की।

पमरिया जाति के अन्दर धार्मिक शिक्षा का भी अभाव है मिथिला दीप या बहपुरा गाँव में धार्मिक शिक्षा के मामले मे उपलब्धता लगभग शून्य ही है। राँटी, बेला, मिथिला दीप, बुन्देलखण्ड, बहपुरा, बासोपट्टी, हरपुर, कलुआही इत्यादि जगहों पर तो मदरसा तक नहीं हैं। मिथिला दीप में मन्नान का पुत्र मो0 साबान हाफिज तक की शिक्षा प्राप्त किया है इसके अतिरिक्त दो युवक और है जो हीफज कर चुके है। झंझारपुर प्रखण्ड के सुखैत पंचायत अंतर्गत गधनपुर ग्राम में दो हाफिज व एक मौलवी तक की शिक्षा प्राप्त कर चुके है। वैसे तो अभी तक पमरिया जाति का कोई भी व्यक्ति एम0पी0, एम0एल0ए0, राज्य सभा अथवा विधान परिषद सदस्य नही है लेकिन मो0 साबिर, राजनगर प्रखण्ड के राँटी पंचायत के उपसरपंच है। हीरा पमरिया, लखनौर प्रखण्ड के दीप पश्चिमी पंचायत के उपमुखिया है। इस जाति में कई वार्ड सदस्य तथा पंच सदस्य बने हैं। इस जाति के अन्दर भी भले ही छोटे स्तर पर धीरे–धीरे राजनीतिक जागरूकता आ रही है।

जहाँ कही भी इस जाति के लोग रहते है और पुश्तैनी काम करते है, वहाँ इन लोगों का अपना–अपना क्षेत्र बँटा हुआ होता है और इस बात की कड़ी चेतावनी होती है कि कोई व्यक्ति किसी और के क्षेत्र में जा कर पुत्र जन्मोत्सव की बधाई नहीं दे सकता है। इनलोगों के क्षेत्र बँटवारा में एक और विशेष बात होती है कि विशेष क्षेत्र का रजिस्ट्री पंत्र, रजिस्ट्री कार्यालय से उनको मिला होता है। क्षेत्र के स्थानांतरण की स्थिति में भी रजिस्ट्री अनिवार्य होता है।

विचार विमर्श

सही ऐतिहासिक साक्ष्य के अभाव के बावजूद यह पता चलता है कि इस जाति की उत्पत्ति के पीछे समाज का सामंत रूप जरूर है। जमींदारों के द्वारा अपने पुत्र के जन्म को यादगार बनाने के लिए गरीब, बेबस लोगों को महिलाओं वाला भेष में सज संवर कर नाचने, गाने पर विवश किया जाता रहा और इसके बदले में उन लोगों को दान स्वरूप कुछ ईनाम दिया जात रहा है। इसी समाज का एक कुरूप चेहरा भी दिखता है कि वे अपनी पुत्री के जन्म के समय खुशी को व्यक्त के लिए इस तरह का कोई आयोजन नहीं करते है। ये पुत्र–पुत्री के बीच भेदभाव का कारण बना है।

पमरिया जाति के लोगों ने यह माना है कि शिक्षा के अभाव में कम आय वाला काम मिलता है या फिर शिक्षित होने के बाद सरकारी काम नही मिलने पर अपनी पुश्तैनी काम को अपनाने में शर्म महसूस नहीं करते हैं। आर्थिक तंगी से परेशान होकर मजबूरन अपने बच्चों को अपने काम में लगा देते हैं। उनका यह भी कहना हुआ कि उन्हें मासिक 12 से 15 हजार का साड़ी, नगदी, कपड़ा या जेवर से मिल जाता है। इससे ज्यादा का काम मिलने पर ही वह दूसरा काम करते हैं। इन लोगों का मानना है कि आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण शिक्षा का भी स्तर निम्न है। अशिक्षा के कारण यह लोग हमेशा ही दूसरे के लिए सिर्फ वोट बैंक से आगे कुछ नही बन सके। इस जाति के 90% लोग मधपान करते हैं। इस बात को स्वीकार करते है कि वे बच्चों को पाँचवा–छठा के बाद ही अपने पुश्तैनी काम में लगा देते है। पटना के राजा–बाजार के डॉ0 नूर हसन आजाद इस समय मे बिरादरी की तहरीक की बागडोर सभाले हुए है।

डॉ0 आजाद दलित मुस्लिम मुहिम के अंतर्गत दलित पसमान्दा समाज मे शैक्षणिक एवं राजनैतिक जागरूकता के लिए दो नारा दिया।

1. नाम बदलो, काम बदलों।

2. पमरिया समाज के लोग अपना उपनाम अब्बासी लिखें।

बधाई और भीख मांगने की जगह वे कठोरतम काम करे तथा सम्मानजनक जिंदगी गुजारे। अपने बच्चों को जरूर शिक्षित करें। उनका कहना है कि चूँकि हमलोग जिस समाज मे पैदा हुए हैं। वहाँ तीन काम एक साथ करना पड़ता है– कमाई, लड़ाई और पढ़ाई। कमाना है खाने के लिए, पढ़ना है सम्मान के लिए और लड़ना है अपने हक के लिए।

इससे सम्बधिंत लोगों को भी सामाजिक न्याय की मूख्यधारा से जोड़ने की आवश्यकता है। इनके अन्दर शैक्षणिक स्थिति को बेहतर बनाने के पमरिया बहुल क्षेत्र में प्राथमिक मध्य व उच्च विद्यालय भी खोले जाने की आवश्यकता है। इन लोगों के अन्दर मजहबी शिक्षा के लिए मदरसा की भी स्थापना की जानी चाहिए। सरकार शिक्षा के क्षेत्र में कई योजनाएँ चला रही है, उससे अवगत करा कर गरीब से गरीब परिवार के बच्चे को लाभांवित किया जा सकता है। बिहार सरकार छात्रवृति, स्टूडेट क्रेडिट कार्ड योजना, नौकरी में आरक्षण, साइकिल, पोशाक, ऋण आदि सुविधाएँ उपलब्ध करा रही है, जिससे पमरिया जाति के बच्चे लाभ उठाकर शिक्षित बन सकते है तथा रोजगार के लिए अवसर तलाश सकते है।

सरकार के द्वारा भी विशेष अनुदान दिए जाने की आवश्यकता है। इसके अंदर लाल और पीला कार्ड यानी गरीबी रेखा की पहचान की जानी चाहिए। इन्दिरा आवास योजना द्वारा इन जातियों का मकान बनाया जा सकता है। भारत सरकार तथा बिहार सरकार ने इस जाति को अन्य पिछड़ा वर्ग में सम्मिलित कर लिया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मुस्लिम समाज का आवश्यक समूह जो सिर्फ अपनी उन्नति की फिक्र करता है और ऐसे लोगों को 'नाच पमरिया नाच' अथवा पमरिया को वेसर कहकर उपहास उड़ाता है उसको भी सोचना होगा कि इसकी उन्नति किस प्रकार होगी तथा यह मुख्य धारा से कैसे जुड़ेगें।

निष्कर्ष

पमरिया एक नाचने गाने वाली जाति है। इस जाति की उत्पत्ति राजपूत या अरब से बताया जाता है। वर्तमान समय में पमरिया जाति के लोग ढोलकी और ढफ से समानता रखने वाले वाधयंत्र झालर को प्रयोग में लाते है। यह जाति आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक आदि रूपों से पिछड़े हुए है। मिथिला में अधिक्तर पमरिया जाति निवास करती है इसे मुख्य धारा से जोड़ने के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी प्रयास किया जा सकता है। शैक्षणिक स्तर उठाकर धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सशक्तीकरण किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. मोहम्मद अरबी (स) :– मोहम्मद अनायतुल्लाह असद सुबहानी, मरकजी मकतबअ– इसलामी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. शम्सूल हक :– बैकवार्ड मुस्लिम इन बिहार, दरभंगा, 1976
3. मैथिली लोकगीत, (संकलन), :– अणिमा सिंह, प्रकाशक साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
4. भारत के दलित मुसलमान, :– सम्पादक – डॉ0 अयुब राईन, खण्ड–1, प्रकाशक आखर प्रकाशन, नई दिल्ली।